Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

Vol:23
Issue: 07

Monthly ANSARULLAH Qadian

2025
July

MAJLIS ANSARULLAH BHARAT

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

Date of Publication : 10-07-2025

GHAR-E- HIRA

(The Cave of Hira)

www.ansarullahbharat.in | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz | Honorary Editor: H.Shamsuddin

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत की मुखपत्रिका
मासिक
अन्सारुल्लाह
क़ादियान

जुलाई 2025 वफ़ा 1404 हि.श.	प्रबंधक अताउल मुजीब लोन	संस्करण–23 अंक -07

सम्पादक : सय्यद रसूल नियाज़ | **एज़ाज़ी सम्पादक :** एच्.शम्सुद्दीन

स.सम्पादक(हिन्दी) : वसीम अहमद अज़ीम

संपादन मंडल
सय्यद कलीम अहमद अजबशेर
मोहम्मद इब्राहीम सरवर
मैनेजर
अज़ीज़ अहमद नासिर
9682536974
प्रेस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य :₹ 250
विदेश: $ 50
प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान 143516
जिला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 7837985190
Email:
ansarullah@qadian.in
WEB LINK
https://www.ansarullahbharat.in/Publications/

विषय सूची	पृष्ठ
सम्पादकीय	2
दर्सुल क़ुरआन	3
दर्सुल हदीस	5
मल्फ़ूज़ात हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम	7
हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के फ़रमूदात	9

संपादकीय

"उस निदा से पूर्व"

क़ुरआन-ए-करीम सिर्फ़ एक पवित्र किताब ही नहीं है, बल्कि एक ज़िंदा और हमेशा रहने वाला पैग़ाम है। लेकिन अफ़सोस की बात है कि आज के मुसलमान, ख़ास तौर पर इस आख़िरी ज़माने के लोग, ख़ुदा की इस हिदायत से जिस तरह ग़फ़लत बरत रहे हैं, उसका बयान ख़ुद क़ुरआन-ए-मजीद में रसूल-ए-करीम (स.अ.व.) की एक दर्द भरी पुकार के ज़रिए किया गया है: يَارَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هَٰذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا "ऐ मेरे रब! बेशक मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को छोड़ रखा है।" (सूरह फ़ुरक़ान: 31) यह शिकायत उस समय के मुसलमानों की नहीं है, बल्कि हमारे ही दौर की है जब क़ुरआन सिर्फ़ तिलावत की रस्म बनकर रह गया है और उसकी रूहानी (आध्यात्मिक) रहनुमाई को ज़्यादातर लोगों ने छोड़ दिया है। साथ ही, रसूल अल्लाह (स.अ.व.) ने फ़रमाया कि मसीह मौऊद और महदी मअहूद के ज़माने में वह रूहानी ख़ज़ाने लोगों में बांटेगा, मगर लोग उन्हें क़ुबूल नहीं करेंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"वो ख़ज़ाने जो हज़ारों साल से छुपे हुए थे, अब मैं देता हूँ अगर कोई लेने वाला हो।" यह रूहानी दौलत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़रिए हमें क़ुरआन की समझ और सही ज्ञान के रूप में मिली, मगर ज़्यादातर लोगों ने इस से फ़ायदा नहीं उठाया। अल्लाह का फ़ज़्ल है कि हमें "مَنْ أَنصَارِي إِلَى اللَّهِ" (कौन है जो अल्लाह की राह में मेरी मदद करेगा?) की पुकार पर "نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ" (हम अल्लाह के मददगार हैं) कहने और हज़रत मसीह मौऊद (अ.स.) की बैअत में आने की तौफ़ीक़ मिली। अब यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम इस इल्म और हिदायत से ख़ुद भी फ़ायदा उठाएं और दूसरों तक भी इसकी रौशनी पहुँचाएं। हज़रत मसीह मौऊद (अ.स.) ने फ़रमाया:

"ऐ बेख़बर! ख़िदमत-ए-क़ुरआन के लिए कमर कस ले, इससे पहले कि वह आवाज़ बुलंद हो जाए कि अब कोई बाक़ी नहीं बचा।" यह वक़्त हमसे तलब करता है कि हम सिर्फ़ नाम के जुड़े हुए न हों, बल्कि अपने अमल (आचरण) से भी इस किताब से वाबस्ता हों। हम उन लोगों में शामिल न हों जो रसूल अल्लाह (स.अ.व.) को मायूस करते हैं, बल्कि हमारा जज़्बा यह हो:

"दिल में यही है हरदम, तेरा सहीफ़ा चूमूं
क़ुरआं के गिर्द घूमूं, काबा मेरा यही है।"

ज़िंदा कौमें अपनी बुनियादों को नहीं भूलतीं और हमारी बुनियाद, हमारा असल रास्ता, हमारा लाहे अमल यही क़ुरआन-ए-करीम है।

(एच. शमसुद्दीन)

दर्सुल क़ुरआन

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल र.ह

ईमान बिल गैब

समस्त ज्ञानों की बुनियाद है!

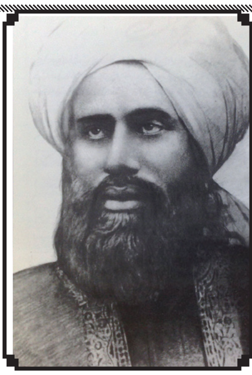

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝

"जो लोग ग़ैब पर ईमान लाते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है, उसमें से खर्च करते हैं।" (सूरह अल-बक़रह: 4)

इसकी वजह यह है कि हर एक सफलता चाहे वह दुनिया की हो या दीन (धर्म) की उसका असल आधार ग़ैब पर ईमान ही है। और उसी के ज़रिए अंतत: बड़े-बड़े ज्ञान और गहरे-से-गहरे रहस्यों का पता चलता है।

उदाहरण के तौर पर देखो, अगर एक बच्चा जब शुरुआती क़ायदा (अक्षरज्ञान) सीखना शुरू करता है और 'अलिफ़' को 'अलिफ़' मानने से इनकार कर दे और उस्ताद से कहे कि "तुम इसे 'अलिफ़' क्यों कहते हो, कोई और नाम क्यों नहीं रखते?", तो क्या वह आगे बढ़ सकता है? हरगिज़ नहीं। उसे मानना ही पड़ेगा कि जो कुछ उस्ताद कह रहा है, वही ठीक है तभी वह आगे बढ़ पाएगा।

इसी तरह गणित, ज्यामिति, बीजगणित और भौगोलिक विज्ञान आदि में भी जब तक शुरुआत में कुछ बातों को "मानकर" न चला जाए, तो आगे नहीं बढ़ा जा सकता। पहले वह कुछ बातों को "मानकर" ही आगे बढ़ता है, फिर आगे चलकर उसके सामने बड़े-बड़े ज्ञान और वास्तविक विज्ञान के दरवाज़े खुल जाते हैं।

पुलिस विभाग जब किसी मामले की तहकीक करता है, तो कई बार शरारती लोगों की बातों पर भी यक़ीन कर लेता है, और उन्हीं "फर्ज़ी" बातों के ज़रिए वह असलियत तक पहुँच जाता है।

गौर से देखा जाए तो अधिकतर यह होता है कि कुछ बातों को "मानकर" ही इंसान बड़े-बड़े ज्ञान हासिल कर लेता है।

ठीक उसी तरह अगर वे भौतिकवादी लोग भी अल्लाह तआला को "मानकर" ही केवल एक संभावना के तौर पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा के अनुसार अमल करना शुरू कर दें, तो देखेंगे कि कैसे-कैसे नतीजे निकलते हैं।

और वे लोग, जिन्हें सीधे तौर पर अल्लाह से हमकलामी (बातचीत) का शर्फ़ (मुक़ाम) हासिल नहीं है, उनके लिए तो अल्लाह अभी "ग़ैब" ही है। अगर वे भी केवल एक संभावना मानकर अल्लाह तआला से दुआ करना शुरू कर दें, तो वे भी अच्छे नतीजे हासिल कर सकते हैं।

(हक़ाइक़ुल फ़ुरक़ान, जिल्द 1, पृष्ठ 39-38)

★ ★ ★

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout, Kasturi Nagar, BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

हज़रत
मुस्लेह मौऊद[रज़ि]

क़ुरआन-ए-मजीद के सात बतन (गूढ़ अर्थ)

दर्सुल हदीस

إِنَّ الْقُرْآنَ نَزَلَ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ،
لِكُلِّ آيَةٍ مِنْهَا ظَهْرٌ وَبَطْنٌ، وَلِكُلِّ حَرْفٍ
حَدٌّ، وَلِكُلِّ حَدٍّ مَطْلَعٌ

हज़रत नबी-ए-अकरम (स.अ.व.) ने फ़रमाया:

"यक़ीनन क़ुरआन सात प्रकार के अक्षरों पर नाज़िल हुआ है, हर आयत का एक बाहरी अर्थ होता है और एक अंदरूनी अर्थ। हर शब्द की एक सीमा होती है और हर सीमा का एक स्थान होता है।"

(अल-इत्तक़ान लिसयूती, रिवायत इब्ने मसऊद)

"क़ुरआन के सात बतन (मतलब अर्थ) हैं। आम तौर पर लोग इस हदीस को पूरी तरह नहीं समझ पाए। इसका मतलब यह भी है कि समय के बदलने के साथ-साथ क़ुरआन की आयतों के अर्थ खुलते जाएंगे। यही वजह है कि पहले ज़माने के लोगों को क़ुरआन की कई आयतों के वो अर्थ समझ में नहीं आए, जो बाद के ज़माने के लोगों को समझ में आए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन करीम के जो गहरे अर्थ और बातें निकालीं, वो कोई नई आयतें जोड़कर नहीं की गईं। वही पुरानी आयतें थीं, बस उस समय के हालात के मुताबिक उनके अंदर के अर्थ खुल गए। क्योंकि समय के साथ हालात बदलते रहते हैं। और मौजूदा दौर में धर्म के बारे में अमन और शांति का दौर है, इसलिए हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने क़ुरआन से अमन और शांति की तालीम (शिक्षा) पेश की और बताया कि अल्लाह ने रसूल-ए-करीम ﷺ से साफ़-साफ़ कहा:

"तुम्हें लोगों पर ज़बरदस्ती करने के लिए नहीं भेजा गया। जो लोग मुंह फेर लेते हैं और इंकार करते हैं, उनको सज़ा देना अल्लाह का काम है, तुम्हारा नहीं। क्योंकि अल्लाह ही दिलों का हाल जानता है, तुम नहीं।"

यह दूसरा पहलू था, जो समय के हालात के मुताबिक हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) पर खोला गया। और इस्लाम के समर्थन में तलवार उठाने से रोक दिया गया।

इसलिए जब रसूल-ए-करीम ﷺ ने फ़रमाया कि "क़ुरआन के सात पहलू हैं", तो इसका

एक मतलब यह है कि दुनिया में सात बड़े-बड़े बदलाव (इंकलाब) आएंगे और हर बदलाव के दौर में लोगों की सोच बदल जाएगी। उस वक़्त अल्लाह तआला क़ुरआन के ऐसे अर्थ खोल देगा जो उस दौर के लोगों के दिल और दिमाग को तसल्ली देंगे। आज के ज़माने में भी बहुत से मसले ऐसे तरीके से समझ में आए हैं, जिनकी पहले ज़रूरत या अहमियत महसूस नहीं होती थी।

उदाहरण के लिए, क़ुरआन की आयतों के "नासिख" (अर्थात अमल से हटाई गई) होने का मसला है। पहले के वक़्त में इस मसले की कोई अहमियत नहीं थी, क्योंकि लोगों के सामने रसूल-ए-करीम ﷺ का अमल था। लेकिन जब ऐसा दौर आया कि लोग हज़रत मुहम्मद ﷺ के ज़माने से दूर हो गए और नए-नए इल्मी और ज़ेहनी बदलाव हुए, तो लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि यह आयत भी नासिख है और वो भी नासिख है।

तब अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) को खड़ा किया, और आपने साबित किया कि क़ुरआन की कोई भी आयत इस मायने में नासिख नहीं है कि उस पर अमल न किया जा सके। आपने उन आयतों के ऐसे अर्थ बताए, जिन्हें समझना लोगों के लिए आसान था। यह भी उन आयतों का एक दूसरा पहलू था जो अल्लाह ने आप पर खोला।

तो "क़ुरआन के सात बतन" (पहलू) का मतलब सात बड़े-बड़े इल्मी, ज़ेहनी और अक़्ली बौद्धिक बदलाव हो सकते हैं। और इस हदीस में बताया गया है कि हर ऐसे बदलाव के दौर में क़ुरआन ज़िंदा रहेगा और कोई यह नहीं कह सकेगा कि अब हमारे ज़माने की ज़रूरतें क़ुरआन पूरा नहीं कर सकता।

बाक़ी जो पहले ज़माने की आसमानी किताबें थीं, उनके बारे में हम कह सकते हैं कि जब ज़माना बदला और नए दौर की ज़रूरतें आईं तो वो किताबें उस दौर के लिए पूरी तरह मुफ़ीद नहीं रहीं। मगर क़ुरआन के बारे में अल्लाह तआला कहता है कि जैसे-जैसे ज़माना बदलता जाएगा और लोग क़ुरआन पढ़ते रहेंगे, इसी क़ुरआन में से ही नए-नए अर्थ निकलते जाएंगे जो उस दौर की ज़रूरतों को पूरा करेंगे। और लोग मानेंगे कि हाँ, क़ुरआन ही हर ज़माने के लिए काफ़ी है और मुहम्मद ﷺ ही हर दौर के लिए सच्चे रसूल हैं।

फिर रसूल-ए-करीम ﷺ ने जो कहा कि "क़ुरआन के सात पहलू हैं", इसका यह मतलब नहीं कि सिर्फ़ सात ही हैं। हो सकता है कि दस, बीस, पचास, सौ, हज़ार, दो हज़ार... जितने भी हों, क्योंकि अरबी ज़बान में "सात" का मतलब बहुतायत (कसरत) भी होता है। जैसे "सात आसमानों" का मतलब भी यही है कि अल्लाह ने इंसानों के लिए बहुत सारी ऊँचाइयाँ (तरक्कियाँ) बनाई हैं।

इसलिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन को ऐसा बनाया है कि यह हर ज़माने के लिए काफ़ी होगा। इसमें हर दौर के ख़यालात और सवालों का जवाब मिलेगा। अगर उस दौर के लोगों के विचार ग़लत होंगे तो क़ुरआन उसकी तर्दीद (खंडन) करेगा, और अगर सही होंगे तो उसकी ताईद (समर्थन) करेगा।

(तफ़सीर-ए-कबीर, जिल्द 10, पृष्ठ 440-442, एडिशन 2023 यू.के)

★ ★ ★

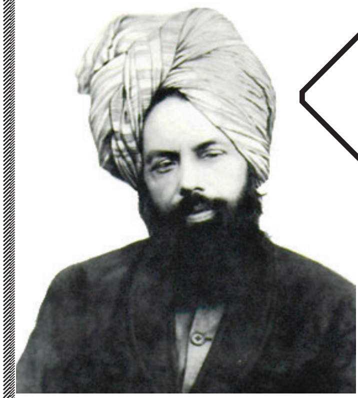

मल्फ़ूज़ात हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

क़ुरआन का दर्जा सितारों की तरह ऊँचा और महान है

क़ुरआन करीम का मक़ाम (दर्जा) सितारों की तरह ऊँचा और बुलंद है। जैसे दूर के सितारों की असली बड़ी रौशनी हमें नहीं दिखाई देती, वैसे ही जो निगाहें कमज़ोर होती हैं, वे क़ुरआन के असली गहरे अर्थ और महानता को नहीं समझ सकतीं।

فَلَا أُقْسِمُ بِمَوَاقِعِ النُّجُومِ ○ وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ○ إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ○ فِي كِتَابٍ
مَكْنُونٍ ○ لَا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ○ تَنْزِيلٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ○

"तो मैं उन सितारों के गिरने की जगहों (मकामात) की क़सम खाता हूँ। और अगर तुम जानो तो यह एक बहुत बड़ी क़सम है। बेशक यह एक इज़्ज़त वाला (बड़ा) क़ुरआन है, जो एक छुपी हुई किताब में है। इसे सिर्फ वही लोग छूते हैं जो पाक दिल वाले हैं। यह सारे जहान के रब की तरफ से उतारा गया है।"(सूरह वाक़िआ

इन आयतों की तफ़सीर करते हुए हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

"मतलब यह है कि मैं सितारों के ठिकानों की क़सम खाता हूँ और यह क़सम बहुत बड़ी है — अगर तुम इसकी हक़ीक़त जान सको। यह क़ुरआन एक अज़ीम और बहुत ही मुक़द्दस किताब है, और इसे वही लोग छू सकते हैं जो दिल से पाक हैं।

इस क़सम का यहाँ ज़िक्र इसलिए किया गया है कि क़ुरआन की यह खूबियाँ बयान की जाएँ कि यह 'करीम' है यानी इसमें बहुत सी रूहानी बड़ाईयाँ और गहरे राज़ मौजूद हैं। और जैसे सितारे दूर से बहुत छोटे दिखाई देते हैं, वैसे ही कुछ लोगों को क़ुरआन छोटा और मामूली लग सकता है। लेकिन हक़ीक़त में ऐसा नहीं है, बल्कि उनकी निगाहें इतनी कमजोर हैं कि वे उसकी असली महानता को समझ ही नहीं पातीं।

(संदर्भ: जंग-ए-मुक़द्दस / रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 6, पृष्ठ 87)

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

क़ुरआन सिर्फ़ मोजिज़ा (चमत्कार) ही नहीं, बल्कि चमत्कार पैदा करने वाला है क़ुरआन सिर्फ़ एक मोजिज़ा नहीं है, बल्कि ऐसा किताब है जो अपने अंदर से चमत्कार पैदा करती है।

इसने मुसलमानों को किसी बाहरी चमत्कार की ज़रूरत से बेनियाज़ कर दिया है। इसकी बरकतों और रौशनी की वजह से यह ख़ुद मोजिज़ा पैदा करने वाली किताब है।

हक़ीक़त में क़ुरआन शरीफ़ में वो तमाम खूबियाँ मौजूद हैं कि इसे किसी बाहरी चमत्कार की ज़रूरत नहीं। अगर कोई बाहरी चमत्कार हो भी जाए तो इससे क़ुरआन की कोई शान नहीं बढ़ती और अगर न हो तो भी क़ुरआन में कोई कमी नहीं आती।

क़ुरआन की खूबसूरती किसी बाहरी ज़ेवर से नहीं बढ़ती, बल्कि वो ख़ुद ही हज़ारों अजीब व ग़रीब चमत्कारों का खज़ाना है जिन्हें हर ज़माने के लोग अपनी आँखों से देख सकते हैं। ऐसा नहीं कि बस पुराने ज़माने के ही किस्से सुनाए जाएं।

यह ऐसा ख़ूबसूरत और प्यारी किताब है कि हर चीज़ इससे मिलकर खूबसूरती पाती है, लेकिन इसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं कि उसे सजाया जाए।

जैसे एक शेर में कहा गया:

"दुनिया की सभी हसीनाओं को ज़ेवरों से सजाया जाता है, लेकिन तू (क़ुरआन) ऐसी सुंदर है कि ज़ेवर खुद तुझसे सजा करते हैं।" (जंग-ए-मुक़द्दस / रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 2, पृष्ठ 61)

★ ★ ★

इमाम-ए-ज़माना (अलैहिस्सलाम) के फ़तवे

विषय: क़ुरआन मजीद के आदाब (शिष्टाचार)

रुकू और सज्दा में क़ुरआनी दुआ पढ़ना :-

मौलवी अब्दुल क़ादिर साहब लुधियानवी ने सवाल किया कि रुकू और सज्दा में कोई क़ुरआनी आयत या दुआ पढ़ना कैसा है?

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया:

"सजदा और रुकू का वक्त इंसान की पूरी फ़रमाबरदारी और झुकने का वक्त है और अल्लाह तआला का कलाम (क़ुरआन) बहुत इज़्ज़त और बुलंदी चाहता है। इसके अलावा किसी हदीस से ये बात साबित नहीं होती कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कभी रुकू या सजदा में कोई क़ुरआनी दुआ पढ़ी हो।" (मल्फ़ूज़ात, जिल्द 3, पृष्ठ 240)

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के फ़रमूदात

हमें क़ुरआन करीम को हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) और ख़ुलफ़ा की वज़ाहतों के मुताबिक़ समझना चाहिए

हम अहमदी बहुत खुशनसीब हैं कि अल्लाह ने हमें इस दौर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की तौफ़ीक़ दी। अल्लाह तआला ने आपको "हकम" और "अदल" (इंसाफ़ करने वाला) बनाकर भेजा, जिन्होंने क़ुरआन करीम के वे छुपे हुए ख़ज़ाने हमारे सामने खोल दिए जिन तक आम इंसान की पहुंच नहीं थी।

ये भी अल्लाह के उसी वादे के मुताबिक़ है जिसमें उसने कहा है कि अगर तुम सीखना चाहो तो हमने क़ुरआन को आसान बना दिया है।

इसलिए, हर अहमदी को ख़ास तौर पर याद रखना चाहिए कि उसे: क़ुरआन पढ़ना है, उसे समझना है, उस पर ग़ौर करना है, और जहां समझ में न आए, वहां हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) की वज़ाहतों से या ख़ुलफ़ा की वज़ाहतों के मुताबिक़ उसे समझना चाहिए। और फिर उस पर अमल भी करना है। तभी हम उन लोगों में शुमार होंगे जिनके लिए यह किताब हिदायत (राह दिखाने वाली) बनी है। वरना अहमदी होने का दावा भी दूसरों के दावों की तरह ही एक नाम भर रह जाएगा कि हम क़ुरआन की इज्ज़त करते हैं। हर एक को खुद सोचना चाहिए कि कहीं उसका दावा सिर्फ़ ज़बानी बातें तो नहीं? क्या वाक़ई वो क़ुरआन की इज्ज़त करता है? असली इज्ज़त यही है कि उसके सब हुक्मों पर अमल किया जाए।

क़ुरआन की इज्ज़त यह नहीं है कि कुछ लोग घर में खूबसूरत कपड़ों में लपेट कर उसे अल्मारी में रख दें, और सुबह उठकर माथे से लगा लें और समझ लें कि सारी बरकतें मिल गईं। ये तो अल्लाह की किताब से मज़ाक है।

दुनियावी कामों के लिए सबके पास वक़्त होता है, लेकिन क़ुरआन करीम को लिए न समझने का वक़्त होता है न पढ़ने का। एक-दो रुकू पढ़ने का भी वक़्त नहीं निकालते।

इसलिए हर अहमदी को फ़िक्र करनी चाहिए कि वो खुद भी और उसके घर वाले (बीवी-बच्चे) क़ुरआन की तिलावत करें। फिर उसका तर्जुमा पढ़ें, फिर हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) की तफ़सीर पढ़ें।

ये तफ़सीर बाकायदा तफ़सीर की शक्ल में तो नहीं, लेकिन मुख़्तलिफ किताबों, ख़ुत्बों और मल्फ़ूज़ात से इकट्ठा कर ली गई है। और ये बहुत बड़ा इल्मी ख़ज़ाना है।

अगर हम इस तरह क़ुरआन को नहीं पढ़ते तो फ़िक्र करनी चाहिए। हर एक को अपने बारे में सोचना चाहिए कि कहीं ऐसा तो नहीं कि अहमदी कहलाने के बावजूद, हम अहमदियत से दूर होते जा रहे हैं? (ख़ुत्बा जुमा 24 सितंबर 2004)

★ ★ ★

स्वास्थ्य संदेश

وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ۔ اَلَّا تَطْغَوْا فِى الْمِيْزَانِ (9-8 सूरह रहमान)

संतुलित आहार (Balanced Diet)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस (रहमतुल्लाह अलैह) ने फरमाया:

आज-कल डॉक्टर इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि हमें अपनी खुराक में प्रोटीन का भी संतुलन रखना चाहिए, जैसा कि ख़ुदा ने हिदायत दी है। डॉक्टर तो ख़ुदा को नहीं मानते, ये बात मैं कह रहा हूँ, लेकिन उनकी रिसर्च यही कहती है कि अगर इंसान तंदरुस्त रहना चाहता है तो उसे अपनी रोज़मर्रा की प्रोटीन की ज़रूरत इस तरह पूरी करनी चाहिए:

कुछ हिस्सा गोश्त से (गोश्त में भी कई तरह के होते हैं — मछली वग़ैरह, लेकिन अभी मैं उस तरफ़ नहीं जा रहा), कुछ हिस्सा पनीर से, कुछ हिस्सा दूध से, कुछ हिस्सा बादाम वग़ैरह से, और कुछ हिस्सा दालों से। दालों में किसी में ज़्यादा प्रोटीन होता है और किसी में कम। ये ख़ुदा की क़ुदरत है कि उसने इंसान के लिए तमाम चीज़ें पैदा कर दीं और फिर ये हिदायत दी:

وَضَعَ الْمِيْزَانَ۔ اَلَّا تَطْغَوْا فِى الْمِيْزَانِ

(उसने तौल (संतुलन) क़ायम किया ताकि तुम उसमें ज़्यादती न करो।)

अब अंग्रेज़ भी इसी बात को कहते हैं और इसे "Balanced Diet" (संतुलित आहार) कहते हैं। क़ुरआन ने 1400 साल पहले ही बता दिया था कि अल्लाह ने हर चीज़ में एक संतुलन रखा है, और हमें हुक्म दिया गया है कि इस संतुलन को मत तोड़ो, वरना तुम्हारी सेहतें खराब हो जाएँगी। अब ये हमारे हाथ में है कि हम संतुलित खाना खाएँ, अपना वज़न ठीक रखें और अच्छे सेहतमंद बनें। या फिर हम इस नियम को तोड़ें और बीमार हो जाएँ।

★ ★ ★

तरबियती इजलास
मजलिस अंसारुल्लाह सागर(कर्नाटक)

जमात अहमदिया केरांग(ओडिशा) द्वारा
आयोजित जलसा यौम-ए-खिलाफत का दृश्य।

मजलिस अंसारुल्लाह सागर द्वारा
आयोजित वकार-ए-अमल का दृश्य।

मजलिस अंसारुल्लाह कोयंबटूर,(तमिलनाडु)
द्वारा आयोजित मैत्रीपूर्ण बैडमिंटन मैच का दृश्य।

मजलिस अंसारुल्लाह महमूदबाद,(ओडिशा)
द्वारा आयोजित साइकिल रैली का दृश्य।